राजीव चंद्रशेखर

एनडीए सांसद

बदलाव की दहलीज पर भारतीय वायुसेना

एक फौजी परिवार से ताल्लुक रखने के कारण मैं ऐसे परिवेश में बड़ा हुआ, जहां वर्दी वाले लोग थे। हमें बंजारों की तरह एक बेस से दूसरे बेस में जाना होता था। हम कुछ महीनों से अधिक कहीं रह ही नहीं पाते थे। सो हमारे दोस्त और पड़ोसी भी बदलते रहते थे। लेकिन इन सबके बीच एक चीज कायम थी, वह थी सेवा का भाव जो कि सेना के हर जवान में नजर आता है। मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे ऐसे माहौल में रहना पड़ा और मैं इसका मूल्य समझ सका।

भारतीय वायुसेना की सेवा की लंबी परंपरा है। पश्चिमी लोकतंत्रों से बाहर हमारी वायुसेना सबसे पुरानी वायुसेनाओं में से है। भारतीय पायलटों ने यहां तक कि प्रथम विश्व युद्ध में भी उड़ानें भरी थीं और लड़ाई में हिस्सा लिया था। एक स्वतंत्र देश के रूप में हमारी शुरुआत भी भारतीय वायुसेना के 12 वें स्क्वाड्रन के डकोटा के अभियान से हुई थी, जिसने 1947 में जम्मू-कश्मीर को बचाने के लिए पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ा था। डकोटा विमान से मेरा बचपन से गहरा रिश्ता है, आज इसे परशुराम के नाम से जाना जाता है और यह आईएएफ हेरिटेज फ्लाइट का हिस्सा बन रहा है। आठ अक्तूबर को वायुसेना दिवस के मौके पर निश्चित रूप से यह आकर्षण का केंद्र होगा। इसके साथ वायुसेना से जुड़े रहे अनेक परिवारों की स्मृतियां जुड़ी हुई हैं।

जो लोग डकोटा के बारे में नहीं जानते उन्हें मैं कुछ बताना चाहता हूं। यह एक भारतीय लड़ाकू विमान है, जिसने 1947-48 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में अहम भूमिका निभाई थी। 1930 के दशक में रॉयल इंडियन एयर फोर्स में पहली बार 12 वीं स्क्वाड्रन में इन्हें शामिल किया गया था। लद्दाख और पूर्वोत्तर क्षेत्र में यह वायुसेना का प्रमुख विमान था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान इनके जरिये जवानों और सामान को लाने-ले जाने में इनकी मदद ली गई थी। ध्यान रहे, भारतीय वायुसेना युद्ध और शांतिकाल दोनों ही स्थितियों में अपनी सेवाएं देती हैं। केरल और उससे पहले जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड में आई प्राकृतिक आपदाओं के समय यह देखा जा चुका है।

राफेल विमानों के दो स्क्वाड्रन के आपात आयात का फैसला वायुसेना की बहुप्रतीक्षित जरूरत है। इसके साथ ही मध्यम और दीर्घकालीन घरेलू निर्माण पर भी ध्यान देने की जरूरत है।

भारतीय वायुसेना की स्थापना आठ अक्तूबर, 1932 को की गई थी और हर वर्ष आठ अक्तूबर को वायुसेना दिवस मनाया जाता है। यह महज इत्तफाक नहीं है कि इसी समय देश में वायुसेना से संबंधित उत्पादन के स्वदेशीकरण पर बहस हो रही है। भारतीय वायुसेना दशकों से हिंदुस्तान एयरोनॉक्सि लिमिटेड (एचएएल) पर निर्भर है। यहां तक कि कम्युनिस्ट युग के रूस ने भी (जिससे भारत की शुरुआती सरकारें खासा प्रभावित रही हैं) सिर्फ एक संस्थान पर भरोसा न कर सुखोई, मिकोयां, मिल, कामोव आदि संस्थानों पर भरोसा किया। भारत सिर्फ एचएएल पर निर्भर है। 1960 के दशक में इसने लड़ाकू विमान एएफ-21 मारुत डिजाइन किया था। उसके पास आज सिर्फ एक ही स्वदेशी उत्पाद है और वह है ध्रुव हेलीकॉप्टर। वास्तव में हाल राजनीतिक नेतृत्व की नाकामी का नतीजा है, जैसा कि देश भर के सार्वजनिक उपक्रमों के बारे में देखा जा सकता है।

दुर्भाग्य से राष्ट्रीय सुरक्षा का फैसला एचएएल या रक्षा मंत्रालय के कुछ अनाम अधिकारी तय नहीं कर सकते। दशकों की उपेक्षा और आधुनिकीकरण की ओर बेरुखी के कारण पाकिस्तान, चीन जैसे पड़ोसियों से मिलने वाली चुनौतियों के बरक्स हम खुद को तैयार नहीं कर सके। जब तक हम लड़ाकू विमानों के उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर नहीं हो जाते, हमें आपात स्थिति में आयात पर ही निर्भर रहना पड़ेगा।

भारतीय वायुसेना की क्षमता बढ़ाने की जरूरत है। आज उसकी लड़ाकू क्षमता ऐतिहासिक रूप से कम है। यह बयान असहज कर सकता है, लेकिन यह मुद्दा सामने लाने की जरूरत है। चीन और पाकिस्तान से मिलने वाली चुनौतियां वास्तविक हैं। भारतीय वायुसेना के लिए विश्वसनीय कवच का होना देश की आर्थिक और कुल सुरक्षा के लिए जरूरी है। भारतीय वायुसेना को दो मोर्चों की लड़ाई के परिदृश्य के मद्देनजर 42 स्क्वाड्रंस की जरूरत है। मुश्किल यह है कि विमान या अन्य उत्पाद के आयात के मुद्दे को भारत में कम महत्व दिया जाता है। दूसरे देशों में यह वहां की आर्थिक गतिविधि का हिस्सा होता है, लेकिन हमारे यहां इस पर बात नहीं होती।

नरेंद्र मोदी सरकार ने आपात आयात के जरिये इस मुद्दे पर गौर किया है। राफेल विमानों के दो स्क्वाड्रन के आपात आयात का फैसला वायुसेना की बहुप्रतीक्षित जरूरत है। इसके साथ ही मध्यम और दीर्घकालीन घरेलू निर्माण पर भी ध्यान देने की जरूरत है। इसमें सार्वजनिक क्षेत्रों के साथ ही निजी भारतीय और बहुराष्ट्रीय दोनों तरह की कंपनियों को शामिल किया जा सकता है। भारत वायुसेना के क्षेत्र में भी आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन कर सकता है, जैसा कि उसने आणविक ऊर्जा के क्षेत्र में किया है।

अपनी स्थापना के अस्सी वर्ष बाद आज भारतीय वायुसेना अत्याधुनिक उपकरणों को शामिल कर बड़े बदलाव से गुजर रही है।